अजोला की उपज का प्रयोग करने के लिए 20 ग्राम सुगरफाफर तथा 5 किलोग्राम गोबर का घोल बनाकर प्रति क्षे. में प्रति मह. दे. बारे।

अजोला उपादन के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें

- अजोला के अधिक उपादन व बढ़ावा के लिए प्रति क्षे. में लगभग 200 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से अजोला बाहर निकालना जरूरी है।
- क्षे. में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ने तथा सूक्ष्म पोषक की कमी को रोकने के लिए 30 दिनों में एक बार क्षे. की मिर्जी का लगभग 5 किलो नई मिट्टी से बदलना चाहिए।
- प्रति 10 दिनों के अंतराल पर 25-30 प्रतिशत पुराने पानी को ताजे पानी से बदल देना चाहिए तथा नये अजोला बीज का उपयोग किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक 3 महीनों में एक बार क्षे. को साफ किया जाना चाहिए, पानी तथा मिर्जी को बदल जाना चाहिए एवं नये अजोला बीज का उपयोग किया जाना चाहिए।
- कीटों तथा बीमारियों से संक्रमित होने पर अजोला के शुद्ध कल्प से एक नई क्षे. तैयार करके पुनः नई क्षे. को उपयोग में लेना चाहिए।
- अजोला को क्षे. से निकालने के लिए छलनी का उपयोग करना चाहिए तथा उसी छलनी में साफ पानी से घोल लेना चाहिए ताकि छोटे-छोटे पीछे जो कि छलनी में फिसके रहते हैं उन्हें वापस क्षे. में डाला जा सके।
- अजोला क्षे. का तापमान 30 डिग्री सेंटिग्रेड से उपर न जाये इसके लिए क्षे. के तापमान पर विशेष ध्यान रखना चाहिए, अतः इसे तैयार करने वाला स्थान छायादार होना चाहिए।
- प्रकाश की तीव्रता को कम करने के लिए छाया करने की जाली (नेट-शेड) का उपयोग करना चाहिए।
- अजोला की क्षे. में बायो मास अत्यधिक मात्रा में एकत्र होने से रोकने के लिए अजोला को प्रतिदिन क्षे. में से हटाना चाहिए।
- अजोला में से गोबर का मक्ख उत्पन्न करने के लिए ताजे पानी से साफ करने के बाद पशुओं को साफ करने के लिए देना चाहिए।

सारांश:— पशुचित्रण में कुपोषण के कारण पशु उपचार की क्षेत्र गिरती जा रही है। अजोला पशु पोषण के लिए उच्च गुणवत्ता युक्त चारे के पूर्ति कर सकता है इसलिए इसका उपयोग में बढ़ाने का प्रयास किया जा सकता है।

अजोला उपचार एक बहुत ही सरल व सस्ती तथा लाभदायक तकनीक है जिससे कम लागत तथा योग्य मेहनत से पौष्टिक तत्त्वों से भरपूर हरा चारा उत्पादन किया जा सकता है।

निदेशालय गोपालन
पशुचित्रण परिसर, लाल कोटी, टोकर रोड, जयपुर
फोन नं. 0141-2740519, 2740613, 2740819
Email : dir.dgs@rajasthan.gov.in, Web : www.gopalan.rajasthan.gov.in
पशुओं के लिए पौष्टिक आहार : अजोला

पशुपालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आहार है। राजस्थान में देश के 10 फीसदी पशुपालन से लगभग 11 प्रतिशत दूध उत्पादन हो रहा है। राज्य की जी.डी.पी. में पशुपालन संचालन का 13 प्रतिशत योगदान है, जबकि राज्य के पशुपालन में कुल मात्र 2 पशु उत्पादन की सभी दरभंगा जीत कर रहे हैं। पशुपालन का लगभग 80 प्रतिशत से ज्यादा मू-मात्र अर्थशास्त्र व आधारित है, जहाँ पशु पौष्टिक विशेष उत्पादन तकनीकी आहार करने के लिए विशेष दुकानों में उपलब्ध है। पशुपालन में अपने अत्यंत दूध उत्पादन करने की तरह पशुपालन व्यवसाय के रूप में अक्सर चर्चा होती है। यह व्यवसाय में व्यवसाय के लिए उच्च गुणवाला उत्पादन करने के लिए कठिन कार्य है। पशुपालन में कुछ लागत का 65-70 प्रतिशत व्यवसाय के क्षेत्र में अभिनव आहार पर होता है। पशुपालन व्यवसाय में बढ़ती लागत तथा दूध उत्पादन में बढ़ती होने के कारण इसे चित्रित किया जा रहा है। व्यवसाय में लागत के कारण अपने उत्पादकों के लिए पौष्टिक आहार की सहायता प्रदान करने की वारंनी अधिक विशेष दुकानों में उपलब्ध है। पशुपालन में चारे-दाने में आने वाली लागत का कम करने हेतु अजोला की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

चोटे किसानों के लिए अजोला उत्पादक एक बहुत ही सरल, सस्ती तथा लाभदायक तकनीक है, जिसमें कम लागत होती है। किसानों ने यह विकास कराने के लिए अजोला का प्रयोग करना शुरू किया है। अजोला की उत्पादक फागू और फ्रॉक्सफीटिया के लिए अजोला का उपयोग विकास करने के लिए उपयोगिता की मात्र आगे आयोजित करता है। अजोला के आदर्श, उत्पादकों के माध्यम से व्यवसाय विकास का प्रयोग करने के लिए आगे आयोजित करता है।

क्या है अजोला?
अजोला जल सतह पर तैरने वाली जलीय फूस है, इसकी पंखुड़ियों में नील हर कृषि बैलियों (नौबेए वा अल्लोनों) ने रोज बनकर रूप में पायी जाती है, जो वायुमंडलीय तब्दीली का प्रमुख कारण है। अजोला की कक्ष, अभ्यासक अन्न एल्क, वितामिन (विटामिन ए, विटामिन बी-12 तथा बीटॉनीडोन), विकासवर्धक साथी के साथ एवं कृषि, पोटेशियम, फॉस्फोरस, फ्लॉयड, कॉपर, मैगनीसियम से बनपूर होता है। इसके बाद उत्पादक दूध के रूप में उपयोग किया जा सकता है। अजोला का उत्पादन तथा उत्पादन के लिए प्रोटीन का एक अच्छा स्रोत है।

अजोला की कई प्राप्ति भाग पाई जाती हैं, परंतु भारत में अजोला उत्पादन का प्रताप मुख्तार से मिलती है। अजोला के उत्पादक, वैज्ञानिक, वेजीटेबल, जैविक और जलीय फूस के रूप में अजोला की अवधारणा भारत में आयोजित करती है। अजोला के लिए जलि पानी दूध के अंतर्गत अजोला दूध का उत्पादन कितने लागत आयोजित करता है। अजोला की उत्पादन से उत्पन्न दूध के रूप में अजोला स्वाद और हृदय से उत्पन्न दूध के रूप में अजोला स्वाद और उत्पादन से उत्पन्न दूध के रूप में अजोला स्वाद और उत्पादन से उत्पन्न दूध के रूप में अजोला स्वाद और उत्पादन से उत्पन्न दूध के रूप में अजोला स्वाद और